नईम

कर्ता हैं हम	सब नकली हैं
उनकी झक उजली चादर से अपनी ज्यादा ही मैली है जिनके लिए आपके मन में जगह नहीं है सुई बराबर अस्तित्वों को जो नकारते रहे– सरासर आभिजात्य जीवन जीने की उनकी अपनी ही शैली है धूल धूसरित औना–पौना मुझे समूचा मुल्क लगे है ठगते हुए गैर को ठगुआ स्वतः ठगे हैं राजभवन में वे बैठे पर निकल गयी अपनी रैली है ढांक रखा है ज्यादातर ने स्याह दिलों को श्वेत झगे से, नहीं रही उम्मीद तनिक भी गैरों से तो ठीक–सगे से कर्ता हैं हम, किन्तु आपकी कीर्ति दिगन्तों में फैली है।	समय नहीं है जीने लायक –ये कहते हैं –वो कहते हैं मौसम ये अनुकूल नहीं है लेते लेते, आज पड़ गयी रिश्वत देना भ्रष्ट पुलिस ही नहीं दिख रही उनको सेना छोटे–बड़े सभी नालायक –ये कहते हैं –वो कहते हैं सब नकली हैं, मूल नहीं है मौका महल देखकर करने को कहते हैं व्यथित कौंच सा वो दुख सहने को कहते हैं कोई नहीं है असली साधक –ये कहते हैं –वो कहते हैं उनकी कोई भूल नहीं है रावण ही रह गये आज प्रभु को उपासने रुई बंद कर दी देना देशी कपास ने प्रभु चोरों का भाग्य विधायक –ये कहते हैं –वो कहते हैं ऐसा कोई रूल नहीं है।
('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)	